सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

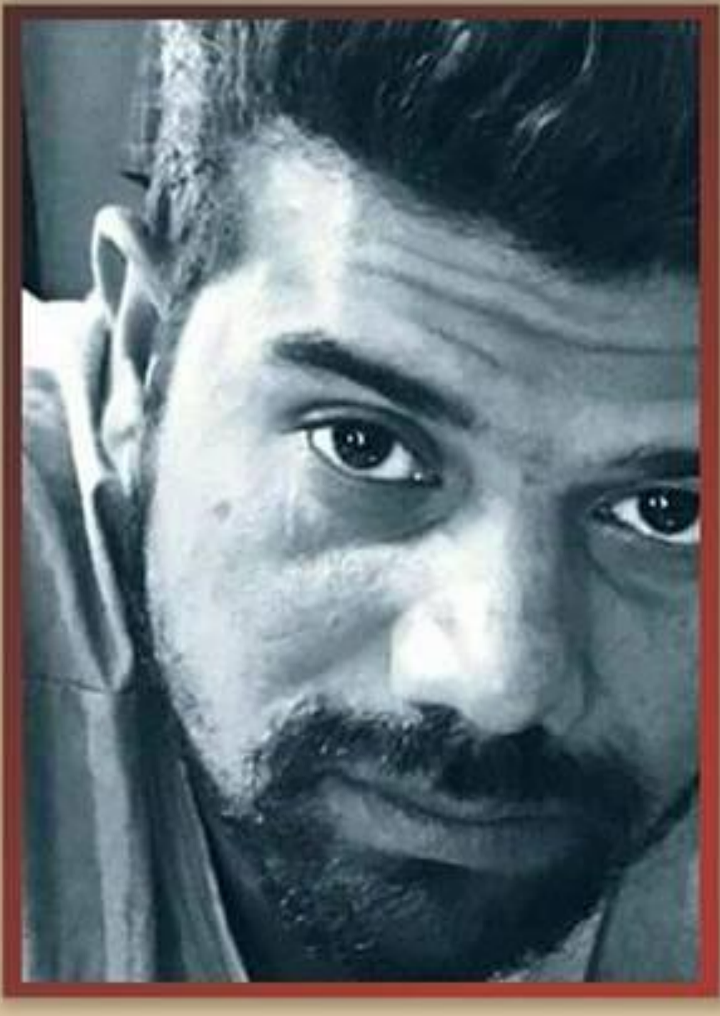

केन्द्रीय रचनाकार

• विनोद तिवारी 'मानस'

सृजक-सृजन-समीक्षा

विनोद तिवारी 'मानस'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

विनोद तिवारी 'मानस' का परिचय

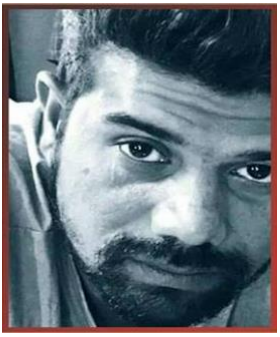

नाम- विनोद तिवारी "मानस"

जन्मतिथि- 19-12 1986

पिताजी- श्री लालता प्रसाद तिवारी

माताजी- श्रीमती गुड्डी तिवारी

पता- ग्राम व पोस्ट भादौर, तहसील आरोन, जिला गुना (म.प्र.)

पिन- 473107

संपर्क सूत्र- 09907659260

शिक्षा- एम. ए.(हिंदी साहित्य)

पद- शिक्षक

उपलब्धियाँ -

"ग़ज़ल- इक जिज्ञासा" साझा ग़ज़ल संग्रह,

"मेरी साँसे तेरा जीवन" पर्यावरणीय दोहा साझा संकलन

इब्तिदा-ए-ग़ज़ल (साझा ग़ज़ल संग्रह)

छंद कलश (साझा छंद संग्रह)

अपूर्वा (साझा गीत संग्रह)

मकरंद (दोहा संग्रह)

गुंजन (ग़ज़ल संग्रह साझा) अनुसंधान काव्य संग्रह एवं कुछ रचनाओं को समाचार पत्र, पत्रिकाओं में स्थान मिला।

आत्मकथ्य

बचपन से ही फ़िल्मी गीत सुनने का शौक रहा, हिंदी की पुस्तकों में सूरदास कबीरदास तुलसीदास जी के दोहों, पदों ने हमेशा आकर्षित किया, जब तीसरी कक्षा में हिंदी पढ़ना सीखा तो दादाजी ने मुझसे कहा कि अब तुम किताब पढ़ना सीख गए हो तो मुझे प्रतिदिन श्रीरामचरित मानस पढ़कर सुनाया करो... मैं हर शाम उन्हें सुनाता और दिनभर चौपाइयों की धुन में कुछ भी उल्टी-सीधी तुकबंदी करता रहता शायद यहीं से बीजारोपण हुआ काव्य का, पर इस बीज को पानी खाद वर्षों बाद मिला, मैंने अपनी पहली रचना स्नातक करने के बाद लिखी, फिर 10-12 रचनाएँ और लिखी (उस समय मात्रा यति गण बह्र आदि का ज्ञान नहीं था) परन्तु पिछले दो वर्षों से हिन्दी छंद एवं ग़ज़लों को whatsapp फेसबुक के साहित्यिक समूहों के माध्यम से सीखने का प्रयास जारी है......जिनकी कृपा से मैं साहित्य के इस गुरुकुल में पहुँचा उनमें सर्वप्रथम नाम आता है सुश्री रत्नमणी जी तिवारी "वर्षा" जो कि कानपुर की रहने वाली हैं..... आ0 शैलेन्द्र खरे "सोम" जी, आ0 अनिल शर्मा "अनंत" जी आ0 ब्रजेश शर्मा "विफल" जी आ0 अवधेश कुमार "अवध" जी आ0 दीपशिखा सागर दीदीजी मैं इन्ही सबको अपना काव्य गुरु मानता हूँ इन सबकी समीक्षाएँ मेरे लेखन में सुधार लाती रहीं...मात्रा,लय,तुक गण,बह्र ये सब मेरे लिए बीज गणित से कम कठिन नहीं थे मगर गुरुजनों ने समय-समय पर मार्गदर्शन किया और मुझे इस योग्य बना दिया कि थोड़ी-बहुत तुकबंदी तो कर ही लेता हूँ...।

विनोद तिवारी "मानस"

सृजक का सृजन

ग़ज़ल

सितम देखो हवा इस पश्चिमी का।
जनाज़ा उठ गया है सादगी का।

हवस का काफ़िला है साथ उसके;
भरम तुझको हुआ है आशिकी का।

उजालों के सभी हैं मीत यारो;
नहीं साथी है कोई तीरगी का।

बिका ईमान सिक्कों की खनक पर;
गिरा कद आज इतना आदमी का।

वफा के नाम से अंजान हैं जो;
हवाला दे रहे वो दोस्ती का।

चखे हैं उम्र भर बस रंज गम ही;
कहूँ मैं ज़ायका क्या चासनी का।

तड़पता दिल, सिसकती रूह "मानस"
सिला तुझको मिला ये आशिकी का।

गीत

हे आदिशक्ति माँ शक्ति मुझे दो,
नव उत्साह लिखूँ।
अनय लिखूँ मैं महलों का,
कुटिया की आह लिखूँ।।
धार कलम की कुंद नहीं हो,
चलती रहे निरंतर।
भाव पवित्र रहें सबके प्रति,
रखूँ न कोई अंतर।।
बहते जाएँ जिसमें पाठक,
वो सरस प्रवाह लिखूँ।
हे आदि शक्ति माँ..........
मग के सारे कंटक चुन लूँ,
निशिदिन पुष्प बिछाऊँ।
परहित सत्य दया करुणा की,
महिमा सदा सुनाऊँ।।
हँसते हुए चलें सब जिस पर,
ऐसी राह लिखूँ।।
हे आदिशक्ति माँ.........
पीतल को कंचन लिखने की,
कला कभी न आये।
भयवश होकर कभी लेखनी,
चारण गीत न गाये।।
साहस विद्या शील विनय दो,
कभी न झूठी वाह लिखूँ।
हे आदिशक्ति माँ.....

ग़ज़ल

मैं भँवर में पड़ा छटपटाता रहा;
वो किनारे खड़ा मुस्कुराता रहा।

लोग कमजोर मुझको समझते रहे;
मैं अदब से सदा सर झुकाता रहा।

जिन्दगी ने दिए दर्द मुझको मगर;
मैं सदा प्यार के गीत गाता रहा।

कह गया दूर अब मैं चला जाऊँगा;
ख्वाब में फिर भी आकर सताता रहा।

बुलबुलें गीत सैयाद का गा रहीं;
मैं था' पागल जो' दाना चुगाता रहा।

जब तलक यार सीखीं न चालाकियाँ;
मैं कदम दर कदम चोट खाता रहा।

आँधियाँ चल रहीं ले मैं' दीपक चला;
वो बुझाती रही मैं जलाता रहा।

इल्लियाँ कर गईं फूल को खोखला;
बागबाँ तितलियों को उड़ाता रहा।

यूँ तो' हँसकर मिला वो हमेशा मगर;
आस्तीनों में' खंज़र छुपाता रहा।

नारी

सृष्टि का आधार नारी
वीर भी श्रंगार नारी।
वेद इनका करें वंदन
ये सुगंधित शुद्ध चंदन।
मयसुता हो या कि सीता
दिव्य दोनों ही पुनीता।
एक निशिचर कुल वधू है
एक दशरथ की बहू है।।

उर्मिला हो या सुलोचन
लक्ष्य है इक एक जीवन।
सोच में अंतर नहीं है
नारियाँ प्रस्तर नहीं हैं।
आदि युग से आज देखो
छिन गया है ताज देखो।
बेड़ियों के बीच नारी
सह रही है कष्ट भारी।।

जिंदगी के पृष्ठ सारे
कुछ हैं कोरे कुछ हैं कारे।
क्या इसे लिखना न आया?
क्यों इसे लिखना न आया?
कैद में है आदमी की
एक मूरत सादगी की।
वासना की वस्तु मानी
है करुण इसकी कहानी।।

द्रौपदी सीता अहिल्या
छद्म छल देखे न क्या क्या।
हाय! आँसू हाय! सिसकी
ये दशा क्यों आज इसकी।
हो रही पग-पग छली है
देखिये कितनी भली है।
वासना के गिद्ध भूखे
टूट पड़ते आँख मूँदे।।

तितलियों को देख भँवरे
चाकुओं के साथ निकरे।
हाथ में तेज़ाब लेकर
हाँ! बदलने को कलेवर।।
दुष्ट पापी धूर्त मानव
बन गया है आज दानव।
निर्भया लुटती रही हैं
हूँक बस उठती रही हैं।।

कोख में मारी दुलारी
बाप ने चलवाय आरी।
भाग आधा घट रहा है
कब अँधेरा छट रहा है।।
कर रहा है भूल मानव
क्या है मानव? धूल मानव।
हो रहा क्या ये विधाता?
क्यों तरस तुझको न आता।।

चीखती अबला अकेली
संग साथी ना सहेली।
लुट गया संसार सारा
वेदना का है पसारा।।
देखते सब ही तमाशा
हाथ आती बस निराशा।
रक्त पानी हो गया है
कुछ पुराना कुछ नया है।।

काठ की पुतली है नारी
डोर नर निज हाथ धारी।
खेल निशि वासर दिखाता
नृत्य नित नूतन कराता।।
पैर अब तो थक गए हैं
देह मन व्याकुल भये हैं।
अब सहा जाता नहीं है
क्यों प्रलय आता नहीं है।।

दो कुलों की शान नारी
सच कहूँ तो बोझधारी।
उर दया के भाव लाओ
बंधनों से अब छुड़ाओ।।
आज "मानस" कह रहा है
आपके पद गह रहा है।
मित्र प्यारे मान जाओ
नारियों को मत सताओ।।

ग़ज़ल

सज गया दहशत का फिर बाज़ार तेरे शह्र में।
दिख रहे हर ओर ही हथियार तेरे शह्र में।
हुस्न की होती नुमाइश हर गली चौराह पे;
जह्नियत लोगों की है बीमार तेरे शह्र में।
हर तरफ चर्चे हैं तेरी बेवफ़ाई के सनम;
क्या कभी आता नहीं अखबार तेरे शह्र में।
दिल लगाने की सज़ा ऐसी मिली हमको यहाँ;
लुट गया खुशियों भरा संसार तेरे शह्र में।
सोचता था मैं मुकम्मल इक समंदर पाऊँगा;
आसमां बरसा रहा अंगार तेरे शह्र में।
अब रुहानी इश्क वाले खो गए जाने कहाँ;
ज़िस्म के भूखों की है भरमार तेरे शह्र में।
दर्दे दिल की इक दवा बाहें सनम वस है तेरी;
आ गया ये सोचकर बीमार तेरे शह्र में।
चंद पैसों के लिए जो बेच देते हैं वतन;
लोग कुछ ऐसे भी हैं गद्दार तेरे शह्र में।
मज़हबी बातें चुनावी मंच से होने लगीं;
हो रहा है धर्म का विस्तार तेरे शह्र में।
तोड़ सब पैमाने डाले आज उसने देख तो;
बोतलों से पी रहा मयखार तेरे शह्र में।
खेलकर मुफलिस के दिल से तोड़ डाला आज फिर;
अश्कों की बारिश के हैं आसार तेरे शह्र में।
मुद्दई मुंसिफ़ है मेरा देख तो आकर ज़रा;
आज फिर क़ानून है लाचार तेरे शह्र में।
बेसहारों का सहारा कौन है मानस यहाँ;
ज़ुर्म की बढ़ने लगी रफ़्तार तेरे शह्र में।

ग़ज़ल

सुनामी आँधियाँ बिजली बहुत तूफ़ान रहते हैं।
समंदर के सफ़र यारो नहीं आसान रहते हैं।।

कोई हिन्दू कोई मुस्लिम कोई सिख कोई ईसाई;
नहीं मालूम धरती पर कहाँ इंसान रहते हैं।

सियासत खेलती है दाँव हिन्दुस्तान में कैसे;
पुजारी महल में तम्बू में याँ भगवान रहते हैं।

कभी गुजरात के दंगे कभी दिल्ली की वो लड़की;
ये मंज़र देखकर सहमे डरे शैतान रहते हैं।

घरों में कैद होकर जी रही हैं लड़कियाँ अब भी;
कदम की सरसराहट पर भी सबके कान रहते हैं।

पढ़ें समझें अमल में लाएँ तो कुछ बात बनती है;
घरों में तो सभी के गीता और कुरआन रहते हैं।

हज़ारों जन्म लेकर भी चुका सकते नहीं "मानस";
पिता-माता के हम पर इतने ही अहसान रहते हैं।

आओ ज़श्न मनाएँ हम

ज़ंजीरों में है आज़ादी, आओ ज़श्न मनाएँ हम।
जलती है केशर की वादी, आओ ज़श्न मनाएँ हम।।

हत्या, चोरी, लूट, डकैती, झूठ,कपट, धंधेबाजी;
उचित मूल्य पर करती खादी आओ ज़श्न मनाएँ हम।

बहिन बेटियाँ दहशत में हैं घर में भी और बाहर भी;
हुआ आदमी है उन्मादी, आओ ज़श्न मनाएँ हम।

राजनीति में असल हरामी पद पाएगा याद रहे;
कर दी गई है आज मुनादी, आओ ज़श्न मनाएँ हम।

बंगले गाड़ी बड़े बड़े हैं, पाल रखे दो-दो कुत्ते;
वृद्धाश्रम में दादा-दादी, आओ ज़श्न मनाएँ हम।

बिक गए मुंसिफ़ और दरोगा पटवारी सारे बाबू;
दर दर भटके है फरियादी, आओ ज़श्न मनाएँ हम।

आरक्षण आतंकवाद ने 'मानस' कैसा हाल किया;
खिले चमन में आग लगा दी, आओ ज़श्न मनाएँ हम।

सृजन की समीक्षा

1.

सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक में प्रस्तुत आज की उत्सवमूर्ति विनोद तिवारी 'मानस' जी का स्वागत है |

मानस की चौपाईयों में जिनका बचपन बीता हो, सहजसही काव्यप्रेमी होना लाजमी है |

आपकी रचनाएं-

1. गजल

बहुत खूब, तड़पता दिल, सिसकती रूह... बेहतरीन पंक्ति

2.गीत

सुन्दर भक्ति प्रार्थना,...बेहद सजीव

3.गजल

वाह... सदा प्यार के गीत ही गाते रहना बंधु

4.नारी

सुन्दर भाव बंध, वेदना और यथार्थ दोनों शामिल...

5.गजल

सुन्दर शब्द चयन...

क्या कभी आता नहीं अखबार तेरे शहर में.... बहुत खूब

6.गजल

सुन्दर

7.आओं जश्न मनाएं हम

बहुत सुन्दर शब्द चयन....

साधुवाद....

मानस जी आप उत्तरोत्तर उन्नति के शिखर पर बढ़े.... यही कामना हैं...

डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

2.

सर्वप्रथम इस छोटी सी लेखनी का नमन स्वीकार करें,..

आज की उत्सव मूर्ति बनने हेतु हार्दिक **बधाई**,..

समीक्षा करने का सामर्थ्य मुझमे नहीं है

रचनाओं पर प्रतिक्रिया देने का दुस्साहस अवश्य कर रही हूँ,

आपका परिचय और आत्मकथ्य पढ़ा, और यही सत्य भी है बड़ो का आशीष एवं मार्गदर्शन ही बच्चों का भविष्य निश्चित करता है,आपके दादा जी के संस्कार,आपको राम चरित मानस की ओर मोड़ना,आपके जीवन में मील का पत्थर साबित हुआ,उन्हीं संस्कारों का पालन करते हुये आज भी आप जीवन पथ पर अग्रसर है,

आपके सहज और परोपकारी व्यक्तित्व से मैं भली भाँति परिचित हूँ, हिंदी के प्रति आपकी निष्ठा एवं तत्परता कौन नहीं जानता,मुझ जैसे जाने कितनों का मार्गदर्शन कर के आपने हिंदी की सेवा हेतु प्रतिबद्ध किया, अतः आज मुझे यह शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुये बहुत हर्ष हो रहा है, क्योंकि यदि आपका मार्गदर्शन मुझे प्राप्त न हुआ होता तो मैं इस पटल पर उपस्थित होकर आपकी रचनाओं पर प्रतिक्रिया देने के योग्य ही न होती,

आपकी प्रत्येक रचना चाहे वह गीत हो गजल हो या छंद,संभवतः ऐसी कोई रचना हो जिसे मैं ने न पढ़ा हो,

सच कहूँ तो उन्हें पढ़कर ही मैं ने लिखना सीखा है,

लेखनी को विराम देने का मन नहीं है किंतु यात्रा में हूँ

सो विवशता है,

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि आप सभी निरंतर साहित्य रथ के सारथी बन माँ हिन्दी का गौरव बढ़ाते रहें,..सादर नमन

मेघा योगी

3.

जब बीज होता है तभी अनुकूल परिस्थितियों में अंकुरण, पल्लवन और संवर्द्धन की संभावना होती है

दादाजी के संस्कारों के बीज का यूँ पेड़ बन जाना पूरे परिवार के लिए गौरव का विषय है। जिज्ञासा के आयोजन में पहली मुलाकात में ही अचंभित थी कि छोटा सा विनोद और इतना ज्ञान, सचमुच शब्द शब्द में प्राण फूंकने का हुनर और इतनी सारी विधाओं का ज्ञान सरस्वती का वरदान ही है।

गीत ग़ज़ल दोहे सजल, सभी विधा का ज्ञान।
आखर आखर कनक सम, हर आखर में जान।।

हर कदम उन्नति की ओर बढ़ो और हिन्दी साहित्य में एक विराट व्यक्तित्व बनो यही दुआ है।

डॉ. प्रीति सुराना

4.

आज की केन्द्रीय रचनाकार आदरणीय विनोद जी का हार्दिक **अभिनंदन** आपका परिचय और आत्मकथ्य पढा।बेहद प्रभावशाली व्यक्तित्व है आपका।

आपकी सभी रचनाएं आपकी लेखनी पर पकड़ को दर्शाती हैं और हर विधा में पारंगत हो यह बताती है।

सभी गजल व गीत बहुत सुंदर लिखे हैं विशेष रूप से
नारी
आओ जश्न मनाएं हम, हर रचना लिखने में आप की लेखनी धुरंधर हैं।

सभी रचनाओं में आपने अपनी संवेदनाओं को बहुत खूबसूरती के साथ उकेरा है।

आपकी रचनाएं पढना सुखद एहसास है | आपको बहुत शुभकामनाएं । आप की लेखनी अनवरत चलती रहे।

चंचल पाहुजा, दिल्ली

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम — www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhashaa.org

मातृभाषा — www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com